Peer Reviewed Refereed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – XIII Issue – I January – February 2024

महात्मा गांधी : कल, आज और कल

डॉ. दत्तात्रय फुके
सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभागप्रमुख,
राजर्षी शाहू महाविद्यालय,पाथ्री, तहसील-फुलंब्री
जिला छत्रपति संभाजीनगर, महाराष्ट्र

डॉ. रोहिदास धोंडीबा गवारे,
सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभागप्रमुख,
अ. र. भा. गरूड महाविद्यालय, शेंदुर्णी जि. जलगाँव

महात्मा गांधी एक ऐसा नाम जो विश्व क्षितिज पर सदैव चमकता रहेगा । उनका नाम भारत ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए सत्य, अहिंसा एवं शांति के पर्याय के रूप में लिया जाता रहेगा । सम्पूर्ण विश्व में उनका जन्मदिन 'अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस' के रूप में मनाना इस बात को स्पष्ट करता है की उनके विचारों की हर युग में आवश्यकता है । उनके विचार प्रासंगिक एवं दिशादर्शक है । महात्मा गांधी जी का सम्पूर्ण जीवन त्याग एवं समर्पण का सर्वोत्कृष्ठ उदाहरण है । हर युग में हर मानव के लिए उनके विचार प्रेरणादायी है । त्यागमय विचारोंएवं आदर्श जीवन आचरण के कारण महात्मा गांधी जी को कभी भुलाया नहीं जा सकता । भारत को आजादी दिलाने में महात्मा गांधी की अहम भूमिका रही है । महात्मा गांधी जी ने 'साधारण रहन-सहन और उच्च विचार' इस तत्व को स्वीकार किया था । महात्मा गांधी कल भी प्रासंगिक थे, आज भी प्रासंगिक है और आनेवाले कल भी प्रासंगिक रहेंगे । उनके निम्न विचारों के माध्यम से इस बात को स्पष्ट किया जा सकता है ।

Global Online Electronic International Interdicipilinary Research Journal's licensed Based on a work at http://www.goeiirj.com

हर मनुष्य से गलतियाँ होती है । इसके लिए महापुरुष भी अपवाद नहीं है । महात्मा गांधी जी 'सत्य के मेरे प्रयोग' इस आत्मकथा में बचपन में हुई अपनी गलतियों को स्वीकार करते है । उनके एक रिश्तेदार के साथ उन्हें बीड़ी पीने की आदत लगी थी । दूसरों को धुआँ उड़ाते देखकर उन्हें भी बीड़ी पीने का मन हुआ । पास में पैसे नहीं होते थे इसलिए नौकरों की जेब में पड़े पैसों को चुराते थे । प्रेमलाल शर्मा कहते है कि,"विज्ञान के जहाज पर बैठी आज कि दुनिया की सभ्यताएँ और उनके बीच सत्य, अहिंसा, सादगी जैसे मूल्यों के बूते एक आदमी इतने चुपचाप ढंग से अपना लोहा मनवा लेता है, जिसे देखकर आइन्स्टाइन को कहना पड़ता है कि 'आने वाली पीढ़ियाँ मुश्किल से ही यह यक़ीन कर पाएँगी कि हाड़-मांस का कोई आदमी इस धरती पर पैदा हुआ था ।' दुनिया में जैसे-जैसे असमानता बढ़ रही है, पर्यावरण पर संकट है, धर्म कि कट्टरता बढ़ी है, वैसे- वैसे पूरी दुनिया को गांधी इन सब के विकल्प के रूप में याद आ रहे हैं ।"1 इतिहास में जीतने भी युद्ध हुए है, उनमें जीतनेवाले को भी पछताना ही पड़ा है । शांति के मार्ग पर चलकर सबकुछ प्राप्त किया जा सकता है । गांधीजी के विचारों में हर एक समस्या का समाधान मिल सकता है । महात्मा गांधी जी कहते है कि,"सुबह का पहला काम ये करें कि इस दिन के लिए संकल्प करें कि- मैं दुनिया में किसी से डरूंगा नहीं- मैं केवल भगवान से डरूं। मैं किसी के प्रति बुरा भाव ना रखूं। मैं किसी के अन्याय के

समक्ष झुकूं नहीं। मैं असत्य को सत्य से जीतू और असत्य का विरोध करते हुए, मैं सभी कष्टों को सह सकूँ।"2 इस बात से उनके सत्य के विचार को समझा जा सकता है । सत्य का मार्ग कठिन अवश्य है लेकिन असाध्य नहीं । सत्य परेशान हो सकता है, पराजित नहीं । निम्न प्रसंग द्वारा उनकी महानता को समझा जा सकता है । "गाँधी जी एक बार यात्रा पर निकले थे । तब उनके साथ उनके एक अनुयायी आनंद स्वामी भी थे। यात्रा के दौरान आनंद स्वामी की किसी बात को लेकर एक व्यक्ति से बहस हो गई और जब यह बहस बढ़ी तो आनंद स्वामी ने गुस्से में उस व्यक्ति को एक थप्पड़ मार दिया। जब गाँधी को इस बात का पता चला तो उन्हें आनंद जी की यह बात बहुत बुरी लगी। उन्हें आनंद जी का एक आम आदमी को थप्पड़ मारना अच्छा नहीं लगा। इसलिए उन्होंने आनंद जी को बोला की वह इस आम आदमी से माफ़ी मांग आए। गाँधी जी ने उनको बताया की अगर यह आम आदमी आपकी बराबरी का होता तो क्या आप तब भी इन्हें थप्पड़ मार देते। गाँधी जी की बात सुनकर आनंद स्वामी को अपनी गलती का अहसास हुआ। उन्होंने उस आम आदमी से इस बात को लेकर माफ़ी मांगी । इस प्रसंग से सीख मिलती है कि, हमें कभी भी अपने ऊपर घमंड नहीं करना चाहिए। आनंद जी को गाँधी जी का अनुयायी होने का घमंड था। लेकिन अगर वही कोई उनके टक्कर का आदमी होता तो वे उसके साथ ऐसा करने से पहले कई बार सोचते । इसलिए हमें कभी भी किसी गरीब या लाचार आदमी से लड़ना नहीं चाहिए। अगर कभी ऐसी गलती हो भी जाए तो विनम्रता से उस व्यक्ति से माफ़ी मांग ले।"[3] निर्बलों पर रौब तो कोई भी कर सकता है । असहाय, निर्बल व्यक्ति को क्षमा करना बहुत बड़ा काम है । सत्य,अहिंसा एवं परोपकार के मार्ग पर चलकर ही ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है ऐसा उनका मानना था । उन्होने कठिन से कठिन समय आने पर भी अहिंसा के मार्ग को नहीं छोड़ा । उनकी दृष्टि में अहिंसा नम्रता की पराकाष्ठा है । आत्मनिर्भर भारत जैसी संकल्पना का मूल विचार महात्मा गांधी के गांवों कि ओर चलो और ग्रामोद्योगों कि स्थापना करो के विचारों को बल देनेवाला है । जब गाँव सक्षम होंगे तो देश अपने आप सक्षम होगा । "आज सम्पूर्ण विश्व के सामने भ्रष्टाचार की समस्या भीषण रूप ले रही है । गांधीजी के मार्ग पर चलकर इस समस्या पर विजय प्राप्त की जा सकती है ।"[4]

नारी शक्ति पर महात्मा गांधी के विचारों को समझना बहुत ही आवश्यक है । वे कहते है की,जिस दिन से एक महिला रात में सड़कों पर स्वतंत्र रूप से निडर होकर चलेगी, उस दिन से हम कह सकते है की भारत ने आजादी हासिल कर ली । आज भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व के सामने महिला सुरक्षितता की समस्या भीषण रूप ले रही है । वर्तमान समय में महिलाओं पर अन्याय- अत्याचारों की घटनाएँ बढ रही है । ऐसी स्थिति में गांधीजी के विचारों को समझना और भी आवश्यक प्रतीत होता है । वे कहते है की स्त्री का असली आभूषण उसका चरित्र, उसकी पवित्रता है । वर्तमान में स्थिति गंभीर तो है ही लेकिन शायद आनेवाला कल भी बहुत ही गंभीर समस्याओं को जन्म देनेवाला है । इस स्थिति से बचने हेतु महात्मा गांधी के विचारों को जीवन में धारण करना ही पर्याय दिखाई देता है । गांधी जी ने महिलाओं को प्रथाओं में प्रतिबंधों में जकड़कर रखने का विरोध किया है । वे लिखते है कि, "पवित्रता महिलाओं को बाहरी मर्यादाओं में जकड़ कर रखने से उत्पन्न होने वाली चीज नहीं है, उसकी रक्षा उसे परदे की दीवार से घेर कर नहीं की जा सकती। उसकी उत्पत्ति एवं विकास भीतर से होना चाहिए ।"[5] वे स्त्री को करुणा, त्याग, प्रेम एवं वात्सल्य की मूर्ति एवं बेहतरीन आदर्श कृति के रूप में देखते है । वे कहते है कि, "स्त्री शिशु को गर्भ में धारण करती है और नौ महीनों तक कोख में पालती-पोसती है और इसी में निहित कष्टमय सुख प्राप्त करती है । प्रसव-पीड़ा से

बडा कष्ट और क्या हो सकता है । वह प्रतिदिन कष्ट सहती है ताकि उसका बच्चा हर दिन विकसित हो । उसे इस प्रेम को पूरी मानवता तक विकसित कर देना चाहिए । उसे यह भूल जाना चाहिए कि वह पुरुष की वासना का लक्ष्य थी अथवा हो सकती है । इस प्रकार वह पुरुष की माँ, उसकी निर्मात्री और नि:शब्द नेता के रूप में उसके बराबर अपना गौरवपूर्ण स्थान ग्रहण करेगी । युद्ध में उलझी दुनिया को प्रेम एवं शांति की कला सीखाना उसी से संभव है ।"[6] यहाँ पर बहुत ही समर्पक उदाहरण द्वारा नारी के महत्व एवं उसकी त्याग भावना पर प्रकाश डाला गया है।

गांधीजी ने जीवनभर जिन मूल्यों को अपने जीवन में उतारा उन मूल्यों को समझना काफी आवश्यक है । आज मनुष्यों-मनुष्यों और देशों- देशों में जो प्रतिस्पर्धा की भावनाएँ पनप रही है वह विकास के लिए हानिकारक साबित हो सकती है । ऐसे समय में गांधी जी का शांति एवं अहिंसा का विचार ही इस जानलेवा प्रतिस्पर्धा से दुनिया को बचा सकता है । गांधीजी मन एवं वचन की शुद्धि को आवश्यक मानते है । साथ ही स्वयं भी इस शुद्धि के निकट नहीं पहुँच पाया हूँ यह स्वीकार करते है । वे कहते है, "शुद्ध बनने का अर्थ है मन से, वचन से और काया से निर्विकार बनना, राग-द्वेषादि से रहित होना । इस निर्विकारता तक पहुँचने का प्रतिक्षण प्रयत्न करते हुए भी मैं पहुँच नहीं पाया हूँ, इसलिए लोगों की स्तुति मुझे भुलावे में नहीं डाल सकती । उलटे, यह स्तुति प्राय: तीव्र वेदना पहुँचाती है । मन के विकारों को जितना संसार को शस्त्र-युद्ध से जीतने की अपेक्षा मुझे अधिक कठिन मालूम होता है ।"[7] महात्मा गांधी एक अजब रसायन थे । हमारे जैसे सामान्य व्यक्ति को एक आध प्राप्त होता है तो हम अहंकारी बन जाते है । हमें गांधीजी से आदर्श लेने की आवश्यकता है । एक बार उनके जन्मदिन के अवसर पर उनके तस्वीर के सामने दीपक जल रहा था । यह देखते ही तुरंत उन्होंने दीपक बुझा दिया । अपनी पत्नी को बुलाकर कहा कि, आज लाखों भारतीयों को रोटी पर खाने को घी नहीं मिलता और मेरे तस्वीर के सामने यह घी का दीपक जलते हुए मैं कैसे देख सकता हूँ ।

गांधीजीने भारतीय समाज मन को बहुत ही बारिकी से अनुभूत किया था । यहाँ की समाज रचना एवं मनुष्य की हर एक बात को उन्होंने समझा था । भारतीय समाज मन में राष्ट्रीय एकता की भावना निर्माण करने के लिए वे कोशिश कर रहे थे । इस संदर्भ में डॉ.पितांबर सरोदे लिखते है कि, "स्वातंत्र्यपूर्व काल में महात्मा गांधी जी ने राष्ट्रीय एकता पर जोर दिया था । इसके लिए वे अंत तक प्रयत्नशील रहें । आज स्वतंत्रयोत्तर काल में इसकी आवश्यकता महसूस हो रही है । धर्म, जाति, पंथ, भाषा, प्रादेशिकता और बढ़ती हुई आर्थिक विषमता के कारण बँटे हुए समाज में राष्ट्रीय एकता की भावना किस तरह पैदा की जाएँ यह समस्या तब भी बेचैन कर रही थी और आज भी बेचैन कर रही है । गांधीजी अच्छी तरह से जानते थे कि धर्मनिरपेक्ष शासन, जनतान्त्रिक जीवन पद्धति, व्यक्तित्व के मूलभूत अधिकार, मानव-मानव में समानता, सामाजिक न्याय, अहिंसा और आपसी सूझ-बूझ आदि बुनियादी तत्वों के आधारपर यहाँ की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक जिंदगी की पुनर्रचना के बिना राष्ट्रीय एकता स्थापित नहीं की जा सकेगी । इसी कारण गांधीजी ने हिन्दू-मुस्लिम, स्पृश्य-अस्पृश्य, स्त्री-पुरुष, शहरी- देहाती, शिक्षित- अशिक्षित, धनवान-निर्धन आदि के बीच का अंतर पाटकर सभी को राष्ट्रीय धारा में शामिल करने की दृष्टि से अपने रचनात्मक कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाई थी।"[8] गांधीजी ने यहाँ की धार्मिक व्यवस्था, अंग्रेजों की दमनकारी नीतियाँ, अंधश्रद्धा, गरीबी जैसी समस्याओं को नजदीक से देखा था । अमरीका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा ने

स्वीकार किया कि, आज मैं जो कुछ हूँ वह महात्मा गांधी के कारण हूँ । अमरीका के स्कूल के एक लड़की ने बराक ओबामा से पूछा कि, आप किनके साथ भोजन करना पसंद करोगे ? तब उन्होंने कहा, महात्मा गांधी जी के साथ । उनका यह जबाब हर भारतीय के लिए गौरव की बात है । महात्मा गांधीजी की महानता को व्यक्त करते हुए कवि नरेंद्र शर्मा लिखते है,

"जन हित के लिए देव तुमने
क्या नहीं सहा ? क्या नहीं किया ?
सौ बार हारकर, सेनानी तुम अपराजित ।
जय और पराजय के सुख दुख से
नहीं युद्ध की गतिशासित,
क्या इसीलिए मृदु पल्लव का लोहा
ब्रजों ने मान लिया ।" [9]

गांधीजी ने जो कुछ किया सत्य का आधार लेकर किया । कहते है कि, सत्य परेशान होता है लेकिन कभी पराजित नहीं होता । झूठ को सत्य के सामने झुकना ही पड़ता है । सत्याग्रह का आधार लेकर लड़ कर जीत हासिल की जा सकती है यह बात गांधीजी ने साबित करके दिखाई । 'राष्ट्रीय झण्डा' इस रचना में गयाप्रसाद शुक्ल लिखते है,

"सत्य सृष्टि का सार, सत्य निर्बल का बल है ।
सत्य सत्य है,सत्य नित्य है, अचल है, अटल है ।
जीवन सर में सरस मित्रवर यही कमल है ।
सत्यरूप है नाथ । तुम्हारी शरण रहूँगा,
जो व्रत लिया, लिए आमरण मरूँगा ।"[10]

उन दिनों स्वतंत्रता का आंदोलन जोरों पर था । एक अंग्रेज व्यक्ति गांधीजी से मिलने दिल्ली पहुँचा । गांधीजी ने उससे कहा, आप सेवाग्राम जाइए । हम कल सेवाग्राम में मिलते है । वही पर बातें करेंगे । अंग्रेज व्यक्ति दूसरे दिन सेवाग्राम पहुँचा । लेकिन इसके पहले दिन गांधीजी की हत्या हुई । इस घटना का से अंग्रेज व्यक्ति को गहरा सदमा पहुँचा । आखिर तक वह व्यक्ति वही पर उनका इंतजार करते रहा । वह कहता की बापू ने मुझे वचन दिया है, वह मुझे मिलने आनेवाले है । उसके मृत्यु के पश्चात वही पर उसकी समाधि बनाई गई । गांधीजी के प्रति इस प्रकार की एकनिष्ठता को देखकर उनका महत्व समझ में आता है ।

"गांधी ने आधुनिक मनुष्य के लिए अहिंसक तरीके से समाज में अच्छाई के लिए लड़ने के लिए कई मूल्यवान बातें छोड़ीं। गांधी ने कहा, 'अच्छा' घोंघे की गति से चलता है । गांधी ने कहा, "अहिंसा धीमी गति से बढ़ने वाला वृक्ष है। यह अदृश्य रूप से लेकिन निश्चित रूप से बढ़ता है। "और फिर " केवल अच्छाई बहुत काम की नहीं होती ।" गांधी ने कहा. "अच्छाई को ज्ञान, साहस और दृढ़ विश्वास के साथ जोड़ा जाना चाहिए। व्यक्ति को सूक्ष्म विवेकशील गुण विकसित करना चाहिए जो आध्यात्मिक साहस और चरित्र के साथ जुड़ा हो। " आधुनिक मनुष्य भी गांधीजी द्वारा सात सामाजिक पापों के बारे में कही गई बातों से बहुत ज्ञान

ले सकता है: सिद्धांतों के बिना राजनीति; काम के बिना धन; नैतिकता के बिना वाणिज्य; चरित्र विहीन शिक्षा; विवेक के बिना सुख; मानवता के बिना विज्ञान; बिना त्याग के पूजा करें।"11 उपर्युक्त विचारों को समझकर हर व्यक्ति अपने जीवन को सफल और सार्थक बना सकत है । इन सब में आचरण की शुद्धता की आवश्यकता महत्वपूर्ण होती है । चारों तरफ आज जो भौतिकता की बयार बढ़ रही है ऐसे समय में इन विचारों की आवश्यकता महसूस हो रही है । "दुनिया ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन और संसाधनों की कमी के बोझ तले झूल रही है। संयुक्त राष्ट्र सहित दुनिया ने सतत विकास के गांधीवादी विचार को मान्यता दी है और हाल ही में संयुक्त राष्ट्र (यूएन) मुख्यालय में गांधी सोलर पार्क का उद्घाटन इसका प्रमाण है। संयुक्त राष्ट्र के सभी जलवायु समझौतों, पर्यावरण संरक्षण संधियों और सतत विकास लक्ष्यों के पीछे गांधीवादी दृष्टिकोण आत्मनिर्भरता प्रेरक दर्शन के रूप में कार्य करता है। 'पृथ्वी के पास मानव की जरूरतों के लिए पर्याप्त है, लेकिन मानव के लालच के लिए नहीं 'महात्मा गांधी की ये पंक्तियां दर्शाती हैं कि कैसे मानव व्यवहार प्रकृति को नष्ट कर देता है और जीवन जीने का एक स्थायी तरीका समय की मांग है।"12

इस प्रकार महात्मा गांधी कल, आज और आनेवाले कल में भी एक आदर्श एवं जीवन को सुखसम्पन्न सार्थक एवं उपयोगी बनानेवाले विचारक के रूप में सदैव प्रासंगिक रहेंगे । हर युग में उनके विचारों की प्रासंगिकता बनी रहेगी ।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है की, महात्मा गांधी के विचार हर युग में प्रासंगिक रहेंगे । सत्याग्रह, सत्य, अहिंसा, जीवनमूल्यों की उपासना, निस्वार्थ सेवा, परोपकार, धर्मनिरपेक्षता, मानवीयता, देशप्रेम, ग्राम जीवन के प्रति आत्मीयता, एकात्मता, समता, बंधुता, निरपेक्ष प्रेम, दृढ़ता जैसे आदि बिन्दुओं को गांधीजी ने धारण किया था । उनके जीवन में इन्हीं बातों को देखा जा सकता है । आज सम्पूर्ण विश्व को गांधीजी के इन विचारों की नितांत आवश्यकता महसूस हो रही है । चारों और भ्रष्टाचार, असत्य, झूठ का बोलबाला है । हमने अगर गांधी जी को नहीं समझा तो विश्व का विनाश होना तय है । युद्ध की परिणति विनाश में होने से रोकनी है तो चलिए हमारे प्रिय बापू के विचारों को समझकर जीवन जीना आरंभ करते है, क्योंकि समय अभी शेष है । आधुनिक मनुष्य भी गांधीजी द्वारा सात सामाजिक पापों के बारे में कही गई बातों से बहुत ज्ञान ले सकता है । सिद्धांतों के बिना राजनीति; काम के बिना धन; नैतिकता के बिना वाणिज्य; चरित्र विहीन शिक्षा; विवेक के बिना सुख; मानवता के बिना विज्ञान; बिना त्याग के पूजा करें तो विश्व की बहुत सारी समस्याए कम हो सकती है । आज विश्व के हर एक देश एवं व्यक्ति के लिए गांधीजी का सम्पूर्ण जीवन एक आदर्श खड़ा करता है । हम भारतीयों के लिए बहुत ही गौरव की बात है की गांधी जी ने हमारे देश में जन्म लिया था । आज विश्व के कई देशों ने उनकी महत्ता को स्वीकार किया है । मनुष्य ने कितना भी हासिल क्यों न कर लिया हो लेकिन उसे शांति एवं प्रेम की आवश्यकता जरूर पड़ती है । जीवन के सही अर्थ को एवं उद्देश्य को समझकर नि:स्वार्थ भाव से जीवन जीना सच्चे अर्थ में गांधीजी को समझना है ।

संदर्भ -

1) महात्मा गांधी और भारतीय भाषाएँ- प्रेमलाल शर्मा (आलेख), समकालीन भारतीय साहित्य - संपादक - बलराम, साहित्य अकादमी की द्वैमासिक पत्रिका अंक, सितम्बर -अक्तूबर 2020
2) Mahatma Gandhi thoughts in Hindi | राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सुविचार (multi-knowledge.com)
3) महात्मा गाँधी के जीवन से जुड़े 5 बेस्ट प्रेरक प्रसंग Mahatma Gandhi Stories Hindi (nayichetana.com)
4) गांधी विचार एवं भ्रष्टाचार, आलेख-डॉ. संतोष खत्री- लोकसेवक (पुस्तक)-संपादक प्रा.भूषण काटे, प्रा. अमर जावले, पृ. -107-108
5) यंग इंडिया - एम. के. गांधी, 03 फरवरी 1927
6) फेमिनिज़्म ऑफ महात्मा गांधी - बारबरा साउथवार्ड, वाल्यूम 13, नं. 17,अकटूबर 1981, पृ. 403
7) सत्य के प्रयोग -एम. के. गांधी,प्रथम संस्करण 1957,नवजीवन प्रकाशन अहमदाबाद, पृ.453-454
8) महात्मा गांधीजी की स्त्रीशक्ति की मूलगामी कल्पना, आलेख- डॉ. पितांबर सरोदे-महात्मा गांधीजींची विचारधारा (पुस्तक), संपादक डॉ. सूर्यकांता अजमेरा, प्रथम संस्करण 2011, अथर्व प्रकाशन, धूलिया पृ. 48-49
9) गांधी विचार आणि आधुनिक हिंदू काव्य, आलेख- डॉ. पितांबर सरोदे - महात्मा गांधीजींची विचारधारा (पुस्तक), संपादक डॉ. सूर्यकांता अजमेरा, प्रथम संस्करण 2011, अथर्व प्रकाशन, धूलिया पृ. 107
10) वही, पृ. 107
11) आधुनिक समय में गांधी की प्रासंगिकता, आलेख - राजेन बरुआ,www.boloji.com से साभार
12) आज की दुनिया में गांधीवाद की प्रासंगिकता, आलेख - ओम प्रकाश परिदा, timesofindia.indiatimes.com 02 अकटूबर 2019